फिशर के समीकरण का उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण—फिशर के समीकरण को हम एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं :

फिशर का स्पष्टीकरण है $$P = \frac{MV + M'V'}{T}$$

मान लीजिए

$$M = 600, M' = 1,000, V = 2, V' = 3, T = 4,200$$

अब समीकरण के अनुसार

पहली स्थिति (i)—$P = \frac{600 \times 2 + 1000 \times 3}{4,200} = \frac{4,200}{4,200} = 1$ रुपया

अर्थात् वस्तु की एक इकाई का मूल्य 1 रु. हुआ। यदि मुद्रा का इकाई मूल्य ज्ञात करना हो तो $\frac{1}{P} = \frac{1}{1}$ अर्थात् 1 वस्तु होगा।

दूसरी स्थिति (ii)—अब यदि $M = 1,200$ व $M_1 = 2,000$ हो जाये तो सामान्य कीमत-स्तर में आनुपातिक वृद्धि हो जायेगी और मुद्रा के मूल्य में आनुपातिक कमी अर्थात्

$$P = \frac{1,200 \times 2 + 2,000 \times 3}{4,200} = \frac{8,400}{4,200} = 2 \text{ रुपये}$$

इस प्रकार सामान्य कीमत-स्तर पर (P) बढ़कर दुगुना हो गया है परन्तु मुद्रा की एक इकाई का मूल्य $\frac{1}{P} = \frac{1}{2} = .5$ वस्तु अर्थात् आधा हो गया है।

स्पष्ट है कि मुद्रा के परिमाण एवं कीमत-स्तर में प्रत्यक्ष आनुपातिक सम्बन्ध होता है।

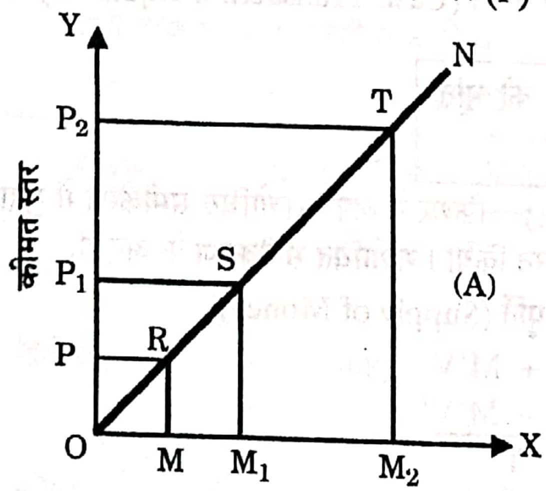

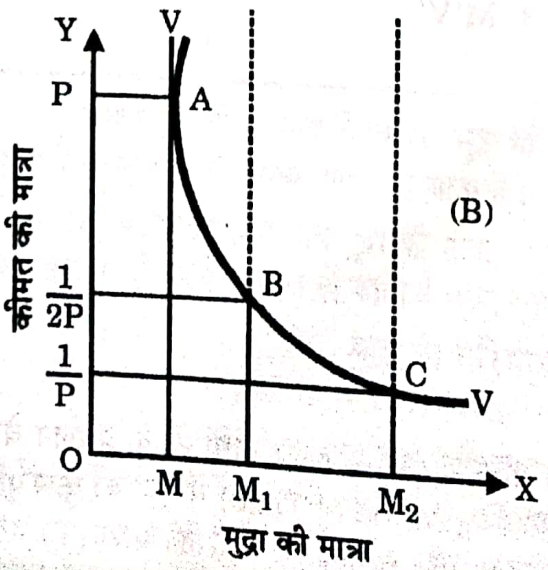

चित्र 3.1

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण (Diagrammatic Representation)

फिशर के सिद्धान्त को निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है :

चित्र A में :

(i) OX रेखा पर मुद्रा की मात्रा और OY रेखा पर कीमत-स्तर लिया गया है। जब मुद्रा की मात्रा OM है तो कीमत-स्तर OP है।

(ii) जब मुद्रा की मात्रा OM से बढ़ाकर OM_1 अर्थात् दुगुना कर दी जाती है तो कीमतों का सामान्य स्तर भी OP से बढ़कर OP_1 अर्थात् दुगुना हो जाता है। इसी प्रकार मुद्रा की मात्रा चार गुनी OM_2 होने पर कीमत-स्तर तद्नुसार चार गुनी बढ़कर OP_2 हो जाती है।

(iii) रेखाचित्र में ON रेखा जो RST बिन्दुओं को मिलाने पर बनती है, कीमत-स्तर और मुद्रा की मात्रा में आनुपातिक सम्बन्ध को व्यक्त करती है।

चित्र B में :

(i) OX रेखा पर मुद्रा की मात्रा और OY रेखा पर मुद्रा का मूल्य $\frac{1}{P}$ प्रकट किया गया है।

(ii) अन्य बातें समान रहने पर मुद्रा की मात्रा (M) और मुद्रा का मूल्य $\frac{1}{P}$ में उल्टा सम्बन्ध पाया जाता है। जब मुद्रा की मात्रा OM से बढ़ाकर OM_1 अर्थात् दुगुनी की जाती है तो मुद्रा का ... 1 ... 1 (आधा)

Scanned with CamScanner

हो जाता है। इसी प्रकार यदि मुद्रा की मात्रा OM_2 अर्थात् चार गुनी कर दी जाती है तो मुद्रा का मूल्य $\frac{1}{4P}$ (एक-चौथाई) ही रह जाता है।

(iii) चित्र में A, B और C बिन्दुओं से मिलकर VV वक्र बना है, वह मुद्रा की मात्रा और मुद्रा के मूल्य में पाये जाने वाले **विपरीत आनुपातिक सम्बन्ध** को व्यक्त करता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

मुद्रा परिमाण सिद्धान्त से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं :

(i) मुद्रा का मूल्य मुद्रा की मात्रा द्वारा निर्धारित होता है; (ii) मुद्रा के परिमाण और मुद्रा के मूल्य में विपरीत सम्बन्ध होता है; (iii) मुद्रा के परिमाण और वस्तु के मूल्यों में सीधा सम्बन्ध होता है; (iv) मुद्रा के परिमाण और उसके मूल्य में जो सम्बन्ध होता है, वह आनुपातिक होता है। यदि मुद्रा का परिमाण दुगुना हो जाय तो मुद्रा का मूल्य आधा रह जायेगा और मुद्रा का परिमाण आधा हो जाय तो मुद्रा का मूल्य दुगुना हो जायेगा; (v) मूल्य-स्तरों में परिवर्तन उसी अनुपात में होता है जिस अनुपात में मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन होता है; (vi) मुद्रा का कुल परिमाण $(MV + M'V')$ सभी वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य $(P \times T = PT)$ के बराबर होता है।

मुद्रा परिमाण सिद्धान्त की मान्यताएँ
(ASSUMPTIONS OF QUANTITY THEORY OF MONEY)

मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है :

(i) फिशर ने चलन मुद्रा (M) तथा साख मुद्रा (M′) **के अनुपात को स्थिर** मान लिया है। (ii) फिशर के समीकरण में **चलन मुद्रा का प्रचलन वेग V तथा साख मुद्रा का प्रचलन वेग V′** भी स्थिर रहता है। (iii) फिशर का विचार था कि **मूल्य-स्तर 'P' निष्क्रिय रहता है** अर्थात् यह M, M′ V, V′ तथा T को प्रभावित नहीं करता वरन् स्वयं इनसे प्रभावित होता है। (iv) फिशर ने यह भी मान लिया है कि अर्थव्यवस्था **पूर्ण रोजगार** की अवस्था में है तथा T (अर्थात् उत्पादन मात्रा) भी स्थिर रहती है। (v) फिशर ने अपने सिद्धान्त में यह मान लिया कि **'अन्य बातें स्थिर रहती हैं।'** यह एक प्राचीन मान्यता है जिसका वर्तमान में कोई महत्व नहीं है क्योंकि यह संसार गतिशील है, न कि स्थिर। (vi) फिशर का सिद्धान्त **दीर्घकाल की मान्यता** पर आधारित है। इस सिद्धान्त के अनुसार दीर्घकाल में मुद्रा की मात्रा तथा कीमत-स्तर में उचित समन्वय स्थापित हो जाता है।

फिशर के परिमाण सिद्धान्त की आलोचनाएँ
(CRITICISMS OF FISHER'S QUANTITY THEORY OF MONEY)

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने फिशर के परिमाण सिद्धान्त की भिन्न-भिन्न प्रकार से आलोचनाएँ की हैं जिनमें से प्रमुख निम्न हैं :

(1) **अवास्तविक मान्यताएँ** (Unrealistic Assumptions)—इस सिद्धान्त में मुद्रा को प्रभावित करने वाले अनेक तत्वों को स्थिर मान लिया गया है। इन अवास्तविक मान्यताओं ने इस सिद्धान्त को अव्यावहारिक बना दिया है, उदाहरणार्थ—(i) व्यापार की मात्रा अल्पकाल में परिवर्तनशील होती है। (ii) मूल्य (P) निष्क्रिय घटक नहीं होता। (iii) वास्तविक मुद्रा व साख मुद्रा की चलन गति भी स्थिर नहीं रहती। (iv) साख मुद्रा और वैधानिक मुद्रा में निश्चित अनुपात स्थिर नहीं रहता है। (v) पूर्ण रोजगार की सामान्य स्थिति अवास्तविक है।

(2) **दीर्घकालीन सिद्धान्त** (Long-term Theory)—इस सिद्धान्त की मान्यताएँ दीर्घकाल में सत्य सिद्ध हो सकती हैं परन्तु मुद्रा मूल्य में दीर्घकाल तक परिवर्तनों का ज्ञान हमारे लिए अधिक उपयोगी नहीं होता। अर्थव्यवस्था की अल्पकालीन समस्याएँ अधिक महत्वपूर्ण होती हैं और उनके विश्लेषण अधिक उपयोगी हुआ करते हैं।

(3) **पृथक् सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं** (No Need of Separate Theory)—यह सिद्धान्त मुद्रा के मूल्य के सिद्धान्त को मूल्य के सामान्य सिद्धान्त से पृथक् मानता है। वह इस कारण अर्थव्यवस्था के मौद्रिक तथा वास्तविक क्षेत्रों को पृथक् कर देता है। वस्तुतः किसी भी वस्तु की भाँति मुद्रा का मूल्य भी माँग व पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा निर्धारित होता है अतः मुद्रा के मूल्य निर्धारण हेतु एक पृथक् सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं है।

Scanned with CamScanner

(4) **पूर्ति पक्ष पर अनुचित जोर** (Undue Importance to Supply Side)—इस सिद्धान्त ने केवल पूर्ति पक्ष पर विशेष जोर दिया है जो अनुचित है क्योंकि मुद्रा का मूल्य केवल प्रचलित मुद्रा के परिमाण द्वारा ही प्रभावित नहीं होता वरन् उसकी माँग द्वारा भी प्रभावित होता है। अतः यह एकपक्षीय सिद्धान्त है।

फिशर के परिमाण सिद्धान्त की आलोचनाएँ

1. अवास्तविक मान्यताएँ
2. दीर्घकालीन सिद्धान्त
3. पृथक् सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं
4. पूर्ति पक्ष पर अनुचित जोर
5. मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन का मूल्य पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है
6. ब्याज के प्रभाव की अवहेलना
7. मुद्रा की क्रय-शक्ति की ठीक-ठीक माप नहीं करता
8. समय विलम्ब पर ध्यान नहीं देता
9. अमौद्रिक घटनाओं का भी प्रभाव पड़ता है
10. संचित मुद्रा पर ध्यान नहीं देता
11. व्यापार-चक्रों की व्याख्या करने में असफल

(5) **मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन का मूल्य पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है** (How Price is affected by the Change in Quantity of Money)—फिशर यह मानते थे कि मुद्रा की माप बढ़ने पर मुद्रा-स्फीति प्रारम्भ होती है और स्फीति की गति नयी मुद्रा के सृजन पर निर्भर करती है अर्थात् $\Delta M/M$ पर। इस प्रकार यदि $\Delta M/M$ 5 प्रतिशत है तो सामान्य मूल्य-स्तर में भी 5 प्रतिशत की दर से प्रतिवर्ष वृद्धि होगी परन्तु यह दोषपूर्ण है क्योंकि यह सिद्धान्त उस प्रक्रिया को स्पष्ट नहीं करता जिसके द्वारा मुद्रा की मात्रा में वृद्धि के फलस्वरूप कुल मौद्रिक व्यय में वृद्धि होती है और जिसके कारण उत्पादन स्थिर रहने की स्थिति में मूल्यों में वृद्धि हो जाती है। संक्षेप में, यह सिद्धान्त इस बात को स्पष्ट नहीं करता है कि मुद्रा की मात्रा के परिवर्तन किस प्रकार से मूल्य-स्तर को प्रभावित करते हैं?

(6) **ब्याज के प्रभाव की अवहेलना** (It Ingnores the effect of Rate of Interest)—यह सिद्धान्त कीमतों पर ब्याज की दर के प्रभाव की अवहेलना करता है। लॉर्ड केन्ज (Lord Keynes), हॉट्रे (Hawtrey), प्रो. हायक (Hayek) आदि के अनुसार इस सिद्धान्त की यह धारणा गलत है कि मुद्रा की मात्रा तथा कीमत-स्तर में प्रत्यक्ष तथा आनुपातिक सम्बन्ध है। वास्तव में, मुद्रा में होने वाला परिवर्तन ब्याज की दर को प्रभावित करता है तथा ब्याज की दर में होने वाला परिवर्तन कीमत-स्तर में परिवर्तन उत्पन्न करता है। मुद्रा की मात्रा तथा कीमत-स्तर में पाया जाने वाला सम्बन्ध प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष (Indirect) है अर्थात् :

मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन ⟶ ब्याज की दर में परिवर्तन ⟶ निवेश में परिवर्तन ⟶ आय तथा रोजगार में परिवर्तन ⟶ उत्पादन लागत में परिवर्तन ⟶ कीमतों में परिवर्तन

अतः यह सिद्धान्त ब्याज की दर की अवहेलना करता है।

(7) **मुद्रा की क्रय-शक्ति की ठीक-ठीक माप नहीं करता** (It does not Correctly Measure the Purchasing Power)—यह सिद्धान्त तो केवल नकद लेन-देन की गणना करता है, जबकि आधुनिक युग के व्यापार के अन्तर्गत अनेक व्यवहार साख और वस्तु विनिमय के आधार पर होते हैं जो कि T में सम्मिलित नहीं रहते। अतः यह सिद्धान्त मुद्रा की क्रय-शक्ति को मापकर केवल रोकड़ी लेन-देन के स्तर (Cash Transaction Standard) को मापता है।

(8) **समय विलम्ब पर ध्यान नहीं देता** (It does not take into Account Time-lag)—मुद्रा के परिमाण में परिवर्तन का प्रभाव मूल्य-स्तर पर तत्काल नहीं पड़ता वरन् कुछ समय बाद ही दिखायी पड़ता है। इस बीच में अनेक बातें ऐसी हो सकती हैं जो उस परिवर्तन के प्रभाव को नष्ट कर दें। यह सिद्धान्त इस बात पर ध्यान नहीं देता है।

(9) **अमौद्रिक घटनाओं का भी प्रभाव पड़ता है** (Non-Monetary Factor's also Affect)—मूल्य-स्तर केवल मुद्रा की मात्रा पर निर्भर नहीं रहता वरन् ऐसे अनेक मौद्रिक व अमौद्रिक कारणों पर निर्भर रहता है जो मुद्रा के प्रभाव को नष्ट कर सकते हैं।

(10) **संचित मुद्रा पर ध्यान नहीं देता** (It Ignores the Store Money)—कीन्स ने इस सिद्धान्त को एक और दृष्टिकोण से असन्तोषजनक बताया है। उनका विचार है कि ...

Scanned with CamScanner

की सारी रकम वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय नहीं कर देता वरन् भावी संकटों से बचने के लिए व्यक्ति हर समय मुद्रा की कुछ राशि संचय करके रखता है। यह संचय की हुई राशि सामान्य मूल्य-स्तर पर कोई प्रभाव नहीं डालती, अतः इसे मुद्रा की मात्रा में से कम करना आवश्यक है।

(11) **व्यापार-चक्रों की व्याख्या करने में असफल** (It Fails to Explain Trade Cycle)—यह सिद्धान्त कीमत-स्तर के उन परिवर्तनों को समझाने में असमर्थ रहता है जो व्यापार-चक्रों के कारण पैदा होते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार यदि मूल्य गिरते हों तो मुद्रा की मात्रा में वृद्धि करके इसको बढ़ाया जा सकता है परन्तु अनुभव बताता है कि सन् 1929 ई. की विश्वव्यापी मन्दी के समय मुद्रा की मात्रा बढ़ने पर भी वस्तु के मूल्य गिरते गये। इस सम्बन्ध में **क्राउथर** ने कहा है कि "घोड़े को पानी पीने से रोका जा सकता है परन्तु यदि उसे प्यास नहीं है तो कितना ही उसे पानी के समीप ले जाइये, वह पानी नहीं पीयेगा।"

मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त की उपयोगिता
(UTILITY OF QUANTITY THEORY OF MONEY)

(i) एक उचित मुद्रा नीति अपनायी जानी चाहिए जिससे मुद्रा तथा साख की पूर्ति पर उचित नियन्त्रण रह सके जो मूल्य में स्थायित्व बनाये रखने के लिए आवश्यक है। (ii) वस्तुओं के अनुचित संग्रह को रोका जाना चाहिए ताकि वस्तुओं की पूर्ति मुद्रा की पूर्ति से पीछे न रहने पाये। (iii) देश के आयात-निर्यात पर उचित ध्यान रखा जाना चाहिए ताकि कमी वाली वस्तुओं का आयात हो सके और अधिकता वाली वस्तुएँ निर्यात की जा सकें। (iv) एक उचित उद्योग नीति अपनायी जानी चाहिए ताकि देश के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो सके और वस्तुओं की कमी के कारण मूल्यों में वृद्धि न हो।

Scanned with CamScanner